पाठभेद

पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
१-३	वेदणीदिसु चदु-	वेदणादिचदु	यही
१-३	बंधगो	बंधगा	यही
२-८	तेहिं	तेहिं	तेइं
४-२	आगमाभावे	आगमाभावे	आगमभावे
४-५	णोआगमादो	णोआगमदो	यही
४-१०	मिस्सणोकम्म-	मिस्सयणोकम्म-	यही
४-१०	कडयाणं	किडुयाणं	यही
४-१९	हैं । तद्व्यतिरिक्त	हैं । उनमें सायकशरीर और भावि-द्रव्यबन्धक ये दो भेद सुगम हैं । तद-व्यतिरिक्त	
६-३	लेस्साए भविए सम्मत्त	लेस्साए भविए सम्मत्त	लेस्साए सम्मत्त
७-६	संवेगानुकम्पास्तिक्य	संवेगानुकम्पास्तिक्य	संवेगास्तिक्य
९-२	एदेसिबंधया	एदेसिबंधाबंधया	एदेसिबंधाबंधया
९-४	भावि	चावि	चावि
१३-१	इयाणं सामण्णो	इयाणं बंधस्स सामण्णो	इयाण बंधस्स सामण्णो
१३-३	पदिदो	पठिदो	x
१७-११	सरीरयस्स	सकिरियस्स	सकिरियस्स
१७-२५	सरीरगत	क्रियासहित	x
१७-१८	अबन्धक ऐसे दो दो भेद हैं	अबन्धक विषयक सन्देह होने लगता, अत:	x
१९-५२	जीवोंकेबन्धक होनेपर भी अकषायत्व पाया	जीवोंमें तथा चौदहवें गुणस्थानगवर्ती अयोगी जीवोमें अकषायपना	x

पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
	जाता है, और चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी जीवोंकेअबन्धक होते हुए भी अकषायत्व		
२०-७	(ण)	ण,	ण,
२१-६	अत्थि	अत्थि	
३१-१	विसएण णोआगस. ओदएण णोआगम-	विसएण ओदइएण णोआगम	विसएण
३४-४	णिव्वत्तिपढम-	णिव्वत्तिदपढम-	णिव्वत्तिदपढम-
३७-७	तेण भंग-	तेण सव्वभंग-	तेण संव्वभंग-
४६-५	गुणतीस- एगुणतीस-	एगुणतीस-	
४५-२	-क्कित्तणा	-क्कित्तणे	-क्कित्तणे
४५-१२	स्थानोंका समुत्कीर्तन अर्थात विवरण करनेवाले	स्थान समुत्कीर्तनमें	
५६-४	उप्पज्जदि	उदेदि	उज्जदि
५८-६	सरीरं	सरीरे	सरीरे
६३-१६	समाधान-नहीं दिया, क्योंकि वह घातिया कर्मोका सहायक मात्र है और घातिया कर्मो केबिना अपना कार्य करनेमेंअसमर्थ हैं तथा उसमें प्रवृत्ति रहित है	समाधान-नहीं, क्योंकि वातिकर्मोंकी सहायतासे होनेवाला वह घातिकर्मोकी बिना अपना कार्य करनेमें असमर्थ है तथा होकर केभी उसकी दु:ख उत्पन्न करनेमें प्रवृत्ति नहीं होती ।	

६४-९	जेण	जीवो	जीवो
६५-३	तेइंदियो	तेइंदियं	तेइंदियं
६५-९	(चउरिंदियं)	x	x
६७-९	जीवट्ठाणे	जीवट्ठाणं	
	जीवट्ठाणं		
६७-२५	पंचेन्द्रियता योग्य होता	पंचेन्द्रियपना बन जाता हैं, और	
	है ऐसा जीवस्थान खण्डमें	इस प्रकार वह जीवस्थान भी	
	भी स्वीकार किया गया है	बन जाता है।	
७०-१९	प्रकृतियोंका उदय तो	अन्य दूसरी प्रकृतियोंके उदयकी	
	पर्यायोंके साथ भी पाया	अन्य जीवांमें साधारणता पाई	
	जाता है और इसलिये	जाती है किन्तु	
	वह साधारण है। किन्तु		
७५-१८	अयोगिकेव्रलीमें योगके	अयोगिकेव्रलीमें योगका अभाव	
	अभावसे यह कहना उचित	होनेसे योग औदायिक नही है,	
	नहीं है कि योग औदायिक	यह कहना उचित नहीं है, क्योंकि	
	नहीं होता क्योंकि अयोगि-	अयोगिकेव्रलीके शरीरनामकर्मके	
७५-१८	केव्रलीके बाद योग्य नहीं	उदयका अभाव होता है।	
	होता तो शरीरनामकर्मका	शरीरनामकर्मके उदयसे	
	उदय भी तो नही होता	उत्पन्न होनेवाला योग उस-	
	शरीरनामकर्मके उदयसे	के बिना नहीं होता, क्योंकि	
	उत्पन्न होनेवाला योग	वैसा माननेमें अतिप्रसंग दोष	
	उस कर्मोदयके बिना नहीं	आता है इस प्रकार औदायिक	
पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
	हो सकता क्योंकि वैसा माननेमें	योगको क्षायो-पशामिक क्यों	
	अतिप्रसंग दोष उत्पन्न होता	कहा जाता है ।	
	इस प्रकार जब योग औदायिक		

	होता है तो उसे क्षायोपशमिक क्यों कहते है?		
७६-६	तिविहो	तिविहो	तिविहो
७६-९	चउव्विह-	चउव्विह-	चउव्विह-
७७-६	-मुदएण	-मुदएण	-मुदए
७९-११	परुवेसो त्ति एदेण	परुवेंतेण एदेण	परुवेंतेण एदेण
७९-१८	सामान्यत:एक रुपसे निर्दिष्ट किये गये भावोंकी अन्तरिक अवस्था विशेष विशेष रुपसे होती है इस	सामान्यसे कहे गये भाव अपने विशेषोंमें रहते हैं इस	
८०-८	तध्देतुत्तविरोहादो ।	तध्देउत्तविरोहादो ।	तध्देउत्तविरोहादो ।
८१-३	ओकडडुक्कट्टण- ओकड्‌डुक्कड्डुण-	ओकड्‌डुक्कड्डुण-	
८२-३	सकज्जकरणा-	सकज्जकारणा-	सकज्जकारणा-
८४-७-८	जावकारणं	भावकारणं	भावकारणं
८४-८	उप्पण्णमदिअण्णाणी	उप्पण्णंमदिअण्णाणं	उप्पण्णंमदिअण्णाणं
८४-८	सो कधं जस्सजीवस्स अत्थि	सो जस्सजीवस्स अत्थि सो मडिअण्णाणी ।सो	सो सो मदिअण्णाणी ।सो
८५-१७	अन्य समीपवर्ती प्रदेशमें योग्यसन्निकर्परुपस्थानमें	योग्य सन्निकर्षरुप स्थानमें	
८६-१७	इन इन्द्रियविषयोंकेज्ञानानुसार	वे जिस प्रकार अवस्थित हैं उस प्रकारकेज्ञानका	वे जिस प्रकार अवस्थित हैं उस प्रकारकेज्ञानका
८६-१८	श्रध्दा रखता हुआ भी जीव हुआ भी	श्रध्दा करता हुआ भी अज्ञान	श्रध्दा करता

जिन भगवानके वचनानुसार कहा जाता है, क्योंकि उसके अज्ञान कहा जाता है, क्योंकि

८६-१८ श्रध्दानके अभावसे जिन वचनानुसार श्रध्दानका उसके जिन वचनानुसार

अभाव है, अत: श्रध्दानकाअभाव है अत:

८८-७ अप्पप्पणो अप्पणो अप्पणो

८९-७ -मुक्केग्गक्कंत्तासेस- -मुक्केग्गक्कंत्तासेस x

९२-८ त्तेण तेण तेण

९५-७ असंजदो असंजदो

असंजमो

९६-६ अचक्खदंसणी अचक्खुदंसणी x

१००-१२ -णुवगमादो णवगमादो णवगमादो

१०२-२ पश्यसि पश्यति x

१०२-९ (चक्खुदंसणं खओवसमियं) x x

१०२-२३ होता है ।।५७।। (पं. २४) ।।५७।। (पं २४) शंका-

x

चक्षु-होता है चक्षु -

१०२-२३ कारण चक्षुदर्शन क्षायोपशमिक कारण (प.२५) उदयमें

१०२-२४ होता है (पं.२५) शंका--उदयमें

१०९-११ उप्पज्जदि त्ति सासणगुणस्स- उप्पज्जदि त्ति सासणगुणस्स

कारण, पारिणामिय भावब्भुवगमादो।

णाणंताणुबंधीणमुदओ

सासणगुणस्सकारणं

पृ.पं. मूळ संशोधित अन्यपाठ

१०९-२९ गुणस्थानका पारिणामिक

भाव स्वीकार किया है ।
अनन्तानुबन्धीका
नियमसे
उदय
सासादनुणस्थानका
कारण नहीं है, क्योंकि
वह चारित्रमोहनीय
है इसलिये उसे

११२-८ इंदियणिरवेक्ख णोइंदियणिरवेक्ख
णोइंदियणिरवेक्ख-
११२-२१ इन्द्रियनिरपेक्ष- नोइंदियनिरपेक्ष- x
११३-१ चाहारो आहारो
११४-८ णिप्फिडिदस्स णिप्फिडदस्स णिप्फिलद्दस्स
११५-२ पुव्व-पल्ल पुव्वपल्ल पुव्व-पुव्व
११५-२ अवेक्खदे उवेक्खदे
उवेक्खदे
११६-६ चउत्थ चउत्थ चउत्थए
११७-४ इच्छिद-इच्छिद इच्छिद इच्छिद (अ.स.)
१२१-१ २३ । ३३ । ३३ । (अ.)
१२२-१ वड्डिया वड्डिमा वड्डिमा (अ.ब.स.)
१२२-४ सुगममेदं x x (अ.ब.स.)
१२२-१४ योनिमती योनिनी x
१२२-१८ योनिमती योनिनी x
१२२-१८ पच्चक्खाणं पच्चक्खाणाणं पच्चक्खाणाणं
(अ.ब.स.)

१२४-१	पंचिदिय (तिरिक्ख)	पंचिदिय (तिरिक्ख)	तिरिक्ख इति पाठो नास्ति प्रतिषु
१२५-१	(मणुसगदीए)	(मणुसगदीए)	प्रतिषु पाठो नास्ति
१२५-१३	(मनुष्यगतिमें)	मनुष्यगतिमें	x
१२५-२१	वह वचन प्रवृत्तिपरोपकारार्थ है ऐसी श्रध्दा उत्पन्न करने- रुप फलकी अभिलाषासेही यहां प्रश्नपूर्वक अर्थका निर्देश किया जा रहा है ।	वचन प्रवृत्तिका फल परके लिये प्रतिपादन करना है।	
१२६-४	अपज्जता	अपज्जता	अपज्जता (ब.)
१२८-४	(दसवासस.)	दसवास सहस्साणि	प्रतिषु अयं पाठः
१२८-१०	पलिदोवमं सादिरेयं त्रिवारनोपलभ्यते	पलिदोवमं सादिरेयं	
१३०-१	वम्होत्तरेसु	वम्तहुरेसु	ब. प्रतौ
१३०-६	सोधम्मीसाणेसु	सौधम्मीसाणे	अ.ब.स.
१४५-२	कम्मस्साउट्ठिदिं	कम्मसामण्णट्ठिदि	अ.ब.स.
१५१-३	इदि वयणादो	इदि	अ.ब.स.
१५१-१४	प्रकारकेवचनसे	प्रकार	
१५२-१२			
१५३-१३	मु प्रतौ सुगमं इति पाठो नास्ति		अ.ब.स. प्रतिषु नास्ति
१५८-७	देवेसुप्पण्णो	देवेसुप्पण्णं	अ.स.
१५८-१०	अणप्पिदवेदो	अणप्पिदवेदादो	अ.ब.स.
१५८-१०	णवुंसयवेदयं	णवुंसयवेदं	ब.
१६४-९	णाणस्स जहण्ण-	णाणस्स तत्थ जहण्ण-	अ.ब.स.
पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ

१६४-१२	तिण्णणेहि	विणाणेहि	अ.स.
१६६-३	भावं गदेसु	भावं व गदेसु	अ.स.
१६६-८	कोडाउएसु खइय-	कोडाउएसु मणुस्सेसु खइय-	ब.
३	विहरिय		
१६७-९	गमिय तदो	गमिय संजमं पडिवज्जिय तदो	अ.ब.स.
१६७-२३	विताकर (पश्चात)	विताकर संयमको प्राप्त कर पश्चात	x
१६९-६	सहम-	कुदो ? सुहुम-	अ.ब.स.
१७३-७	अभविय मभविय-	अभविय	अ.स.
१७९-१	तिण्णि करणाणि	तिण्णि वि करणाणि	अ.ब.स.
१८२-६	एग समयावसेसे	एगसमयावसेसाए	अ.ब.स.
१९१-६	सांतराणि	सांतराणि वतव्वाणि	ब.
१९७-३४	।। २९ ।।	।। २९ ।। सुगमं,	अ.ब.स.
१९९-९	असंखेज्जलोगा	असंखेज्जा लोगा	अ.स.
२०३-७	पज्जताणमंतरं	पज्जत्तअपज्जत्ताणं	ब.
२०३-२१	पर्याप्त जीवोंका	पर्याप्त और अपर्याप्तजीवोंका	ब.
२०६-८	कूदो	x	अ.ब.स.
२११-३	षढममए	षढमए	अ.स.
२१२-३	सुगमं	x	अ.स.
२१६-८	माणादिगड	मणादिं गद	ब.
२१७-५	(उपमंग पडच्च)	x	अ.ब.स.
२१८-१	अण्णाणी	अण्णाणाणि	अ.
२१८-२	सागरोपमाणि	सागरोपमाणि देसूणाणि	अ.स.
२१८-३	घेतूण छावट्ठि-	घेतुण सण्णणिसु देसूण-	अ.ब.स.

२१८-३-४	देसूणाणि सण्णाणेसु अंतरिय	देसूणाणि अंतरिय	अ.ब.स.
२१८-८	सम्मामिच्छत्तंव	सम्मामिच्छत्तं च	ब.
२१८-१२	अन्तर दो	अन्तर कुछ कम दो	
२१८-१४	करके कुछ कम	करके सम्यग्ज्ञानद्वारा कुछ कम	
२१८-१५	प्रमाण सम्यग्ज्ञानोंका अन्तर	प्रमाण अन्तर	
२१९-४	सव्व जहण्ण	सहजहण्ण	अ.ब.स.
२२१-३	णवरि	x	अ.स.
२२८-८	अप्पणो	अप्पप्पणो	अ.ब.स.
२२९-५	-मुहुत्तूण	-मुहुत्तेहिंऊण	ब.
२३२-५	समाणदेवं	समाणेदव्वं	ब.
२३३-१०	(ण)	ण	अ.ब.स.
२४३-२	(खइयसम्माइट्ठी)	खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी	ब.
२४३-५	(सासण)	सासण	अ.ब.स.
२४८-५	x	एदेण	अ.ब.स.
२४९-१०	माणं कमेण	माणक्कमेणं	अ.स.
२५२-११	कालेण	x	अ.स.
२५७-३	पमाणेण	माणेण	अ.ब.स.
२५९-६	वतीए	तत्तीए	अ.स.
पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
२६०-	णिरस्थति	निरस्यन्ती	अ.स.
२६६-१	असंखेज्ज-	असंखेज्जदि	अ.स.
२६९-१२	असंखेज्जाणं	असंखेज्जासंखेज्जाण	ब.
२७४-११	संखेज्जरुवेहिदे	संखेज्जरुवेहि भागे हिदे	ब.
२७६-७			
२७९-१२	मेत्ताओ देव-	मेत्ताओ एदाओ देव	अ.ब.स.
२९१-९	वा.	व.	ब.

२९९-९-१०	विप्पुंजणं	विप्फुंजणं	ब.
३००-२	बाहल्येण	वाहल्लेण	ब.
३००-५	क्खमं दोसयरहिदं	क्खमादो सपरदोसरहिदं	अ.ब.स.
३००-९	सव्वय	पच्चय	अ.ब.स.
३००-८	घाउववज्जिएण	घाउवज्जिएण	अ.स.
३१०-१४	प्रमाण	बाहल्यरुप	
३०१-२	कचं	कचं	ब.
३०२-७	उजुगदीए	उजुदीएण	ब.
३०९-७	-भागे अच्छंति	-भागे मोत्तूण माणुस खेतस्स संखेज्जदिभागे	अ.ब.स.
३१०-६	तेजहार	तेजाहार	अ.स.
३१२-५	मरंतरासी	भारणंतियरासी	अ.ब.स.
३१३-३	गुणगारो	गुणगारे	अ.स.
३१३-५	कायव्वं	x	ब.
३१३-११	वासद्देण	चे सद्देण	अ.ब.स.
३१६-१	-भागेण	भागे	ब.
३१६-१०	विवादाण	द्विदाण	अ.ब.स.
३१८-३	सोहम्मीसाणा	सोहम्मीसाणे	अ.ब.स.
३१९-४	विप्पुंजणं	विप्फुंजणं	ब.
३२१-४	एइंदिया तेसिं	एइंदिया सुहुमेइंदिया तेसिं	अ.ब.स.
३२३-२	मेत्तदपराणं	मेत्तरज्जुपदराणं	अ.ब.स.
३२३-८	वा.	x	ब.
३२६-८	सत्थाणेण केवडि	सत्याणेण उववादेण केवडि	अ.ब.स.
३२७-१	संखेज्जा	संखेज्जा	अ.स.

३३३-७	असंखेज्जलोग	असंखेज्जालोग	अ.स.
३३५-४	जदि पत्तेय	जदि वि पत्तेय	अ.स.
३३६-६	समुध्दादे	समुध्दादेहि	अ.स.
३३९-१	णर-तिरिय	तिदिय	अ.ब.स.
३३९-९	पंचिदियपज्जत	पंचिदिय-पंचिदियपज्जत	ब.
३४२-८	-कायजोगोणंमारणंतियादी	कायजोगीणमाणंतियादो	ब.
३४२-१०	तमणालिं	तसरासि	अ.ब.स.
३४२-२३	जीवोंकेमारणंतिकसमुध्दात होता है ।	जीव अनन्त है	x
३४२-२५-२६	जीवोंका अन्यत्र विहार नहीं है	जीवोंका अन्य एकेन्द्रिय जीवोंमें विहारका अभाव है	
३५५-८	वेउव्वियस्स	वेउव्यियं	अ.स.
पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
३५८-७	कालेण	काले	ब.
३६०-१२	णव्वदे	णज्जदे	अ.स.
३६१-१	णव्वदे	णज्जदे	अ.स.
३६२-१२	पदट्ठिदजीवा	पदिट्ठिदजीवा	अ.स.
३६७-७	वासद्देण	चेसद्देण	अ.स.
३७१-१	देउव्वियपदपरिणदेहिं	वेउव्वियपदेहिं परिणद-णेरइएहिं	अ.ब.स.
३७१-६	भागत्तं? असीदि	भागत्तं? वुच्चदे-असीदि	अ.ब.स.
३७२-३	घणरज्जू	घणरज्जूओ	ब.
३८१-१	कवाम-लोग	कवाड-पदर-लोग	ब.
३८१-१	(ण)	ण	ब.

३८३-११	परुवणाओ	परुवओ	अ.ब.स.
३८५-८	व	दि	अ.ब.स.
३८५-२२-२३	कालकेसमान अतीत कालमें भी तिर्यग्लोकके	कालमें भी तिर्यग्लोकके	
३८६-११	वुत्त	मैत्त	अ.
३८६-१२	हेट्ठदो	हेट्ठा	अ.ब.स.
३८८-३	देवगदिभंगो	देवभंगो	अ.ब.स.
३९०-८	तदोतत्तो	तत्तो	अ.ब.स.
३९१-४	भावेण	भावेण तत्थ	अ.ब.स.
४००-७	पुढविकाइय वाउकाइय सुहुम-तेउकाइय	पुढविकाइय-आउकाइय-तेड-काइय-वाडकाइय-सुहूमपुढ-विकाइय-सुहुमआउकाइय-सुहुमतैउकाइय	
४००-२०	पृथिवीकायिक-वायुकायिक-सूक्ष्मतेजस्कायिक	पृथिवीकायिक-अप्कायिक-तेजस्कायिक-वायुकायिक-सूक्ष्मपृथिवीकायिक-सूक्ष्म-अप्कायिक-सूक्ष्मतेजस्कायिक	
४१०-७	चेवमस्सिंदूण	चेव अस्सिदूण	अ.ब.स.
४३१-९	ट्ठावणसुध्दिसंजद-सुहुम-	ट्ठावणसुध्दिसंजद-परिहारसुध्दिसं-जद-सुहुम-	ब.
४३१-१२	तुल्लाोंति	तुल्ला ण होंति	अ.ब.स.
४३१-२३	स्थापनशुध्दिसंयत और सूक्ष्म	स्थापनशुध्दिसंयत, परिहारशुध्दि संयत और सूक्ष्म	
४३१-२६	तुल्य होते हैं,	तुल्य नहीं होते हैं,	
४४०-९	चेव ट्ठाणमुवरि	चेवध्दाणमुवरि	अ.ब.स.

४४०-२१	स्थान ऊपर	अध्वान ऊपर	
४४८-८	रुंदखेत्तस्स	रुंदफोसणखेत्तस्स	अ.ब.स.
४५०-३	अड्ढाइज्जादो	अड्ढाइज्जस्स	ब.
४५६-१०	भागा देसूणा	भागा वा देसूणा	अ.ब.स.
४५६-११	कुदो? छड्डि-	ण, कुदो? छड्डि	अ.
४५६-२४	x	शंका -- उक्तजीवोंनेकुछकम ग्यारह बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्रका	
पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
		स्पर्शन कैसे किया है? समाधान --नहीं	
४५७-३	भागंतूण	भंगूण	ब.
४५७-१८	नहीं, कयोंकि आयुकेनष्ट होने- पर उक्त जीव मिथ्यात्व गुण- स्थानमें आजाते हैं, अत:मिथ्या- त्वमें आकर सासादन गुणस्थानके साथ उत्पत्तिका विरोध है ।	नहीं, क्योंकि मिथ्यात्वगुणस्थान को छोडकर उक्त जीवोंका सासा- दन गुणस्थानके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेका विरोध है।	
४७०-११	पवेसियव्वा	पवेसिय	अ.ब.स.
४७८-४	गदिणिद्देसो सेसमग्गणपडिसेह- फलो णिरयगइणिद्देसो सेसगइप- डिसेहफलो ।	गतिपदकेनिर्देशकरनेका फल शेषमार्गणाओंका निषेध करना है। नरकगतिकेनिर्देशकरनेका फलशेषगतियोंका निषेध करना है ।	
४७९-५	पज्जुवास	पज्जुदास	अ.
४८०-२१	पज्जुवास	पज्जुदास	अ.
४८१-५	अण्णेसु तत्थु	अण्णेसु जीवेसु तत्थु-	
४८४-९-१०	अ.ब.स. प्रतिषु णत्थि अंतरं एस सूत्रं तट्टीका सुगमं च नोपलभ्यते		
४८५-१०	कथमेदं	कथमेदं	अ.स.

४९५-७	सेसाणियोगद्दारपडिसेहफलो णेरइय	सेसाणियोगद्दारपडिसेहफलो । णिरयगइणिद्देसोसेसगइपडिसेहफलो। णेरइय-	अ.ब.स.
४९५-२०	प्रतिषेध है। नारकीजीवोंका	प्रतिषेध है। णिरयगइपदके निर्देशका फलशेषगतियोंका निवारणकरना है । नारकीजीवोंका	
४९८-१	अवहारिय	अवहरिय	अ.स.
५००-३	तम्हि तिण्णि	तम्हा तिण्णि	अ.स.
५००-७	असंखेज्जदिभागो	असंखेज्जा भागा	
५००-११			
५०१-१०	पमाणत्तदंसणादो	पमाणदंसणादो	अ.स.
५०२-४	तेउकाइया बादरा	तेउकाइया वाउकाइयाबादरा	अ.स.
५०२-१४	अनन्तबहुभाग	अनन्तवें भाग	
५०२-२०	तेजस्कायिक, बादर	तेजस्कायिक, नौवायुकायिक बादर	अ.स.
५०४-१०	भवहारिय	भवहारिय	अ.स.
५०५-५	सुहुमकम्मोदयेण	सुहुमणामकम्मोदयेण	अ.ब.स.
५०६-२	बादरवण्णप्फदि	वणप्फदि	ब.
५०६-८	पुव्वंसुहूम-	पुव्वंवसुहूम-	अ.ब.स.
५०६-१३	समाधान-निगोद प्रतिष्ठित जीवोंकेबादरनिगोदजीव इस प्रकारकेनिर्देशसे तथा वनस्पतिकायिकोंकेआगे नि-गोदजीव विशेष अधिक हैं इस प्रकार कहे गये सूत्र वच-नसे भी यह जाना जाता है ।	समाधान- एक तो निगोदजीवोंसे प्रतिष्ठित वनस्पतिकायिकजीवोंके बादर निगोदजीव इस प्रकार निर्देश पाया जाता है दूसरे वनस्पतिकायि-कोंकेआगे निगोदजीव विशेष अधि-कहें इस प्रकारका सूत्रवचन उपलब्ध होता है उससे उक्त बात जानी जाती है ।	

पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
५३९-२	असंखेज्जदिभागत्तादो	असंखेज्जदिभागस्स अणंतभागत्तादो	
५३९-९	सुत्तेसु	सुत्ते	
	अ.ब.स.		
५४०-३	वुत्तस्स	वुत्तत्थस्स	
	अ.ब.स.		

५३१ में शंका-समाधानकी अपेक्षा ऐसा अनुवाद ठीक है --

शंका -- वनस्पति नामकर्मके उदयवाले होनेकी अपेक्षा सबमें एकता है ?

समाधान -- इस अपेक्षा उनमें एकता रहे, किन्तु उसकी यहाँ विवक्षा नहीं हैं। यहाँ आधारपने और अनाधारपनेकी ही विवक्षा हैं, इसलिये वनस्पतिकायिकोंमें बादर निगोद प्रतिष्ठित और बादर निगोद अप्रतिष्ठित को ग्रहण नहीं किया है।

अत: वनस्पतिकायिक जीवोंके ऊपर अर्थात उनसे निगोदजीव विशेष अधिक है ऐसा कहनेपर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर और बादर निगोद प्रतिष्ठितकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं ।

शंका --वादरनिगोद प्रतिष्ठित और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित जीवोंकी निगोद संज्ञा कैसे है ?

पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
५४७-४	पडिभागो	को पडिभागो ?	
५५०-१	बादरवण्णप्फदिपत्तेयसरीरेहि	बादरवण्णप्फदिकाइय- पत्तेयसरीरेहिं,	ब.
५५०-१०	यहां यह लो		

विशेष कितना हैं ? बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा बादरनिगोद प्रतिष्ठित जीवोंसे विशेष अधिक है । (देखो ५४१ पृ.)

पृ.पं.	मूळ	संशोधित	अन्यपाठ
५५७-१०	-मभावादो	संभवादो	
	अ.ब.स.		
५६१-४	ओवट्टिदे देसूण	ओवट्टिद देसूण	ब.

५६३-१० संजमट्ठिद संजमाहिट्ठिद

अ.स.

५७७-२ उवएसो उवएसादो अ.स.

५७७-१० (जयंत) जयंत

अ.ब.स.

५८५-११ कालेण भागे -कालेण वाणवेंतर

अ.ब.स.

अवहारकाले भागे

ये ताडपत्र आधारसे किये गये संशोधन हैं । ये प्रतियाँ तीन हैं । अ. और स. प्रतियोंमें कोई भेदज्ञान नहीं होता, क्योंकि उनमेंसे एक प्रतिको ही प्रतिलिपि दूसरी प्रतिज्ञात होती है । ब. प्रतिमें कतिपय ऐसे पाठ पाये जाते हैं जो अ. और स. प्रतिमें नहीं उपलब्ध होते ।

यहाँ इस सूचीमें हमने वे ही पाठ लिये हैं जो मुद्रित प्रतिमें संशोधित किये गये हैं । परन्तु ऐसा करते हुए कुछ पाठोंभेदों को छोड दिया गया है । उसकेआधार पर कहीं कहीं अनुवादमें भी परिवर्तन किया गया है । कही कहीं विषयको स्पष्ट करनेकी दृष्टिसे भी थोडा परिवर्तन किया गया है ।

किन्तु यहाँ वे पाठ नहीं लिये गये है जो मुद्रित प्रतिमें तो ठिक है । किन्तु उक्त तीनों प्रतियोंमें या उसमेंसे किसी एक या दो में दूसरे पाठ पाये जाते हैं । फिर भी कहीं कोई विषय हमारी दृष्टिमें नहीं आया तो पाठक अन्यत्र पाये जानेवाले प्राचीन गुरुआम्नायसे आये हुए पाठके आधारसे उसमें संशोधन कर लेवें ।